गुस्ताख़ ए रसूल ﷺ की सज़ा

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है
बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह और उसके रसूल ﷺ को उन पर अल्लाह की लानत है दुनिया में आख़िरत में और अल्लाह ने उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (सूरेह अहज़ाब #57)

हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है के "**फतह मक्का के दिन हुज़ूर ﷺ मक्का मुकर्रमा में तशरीफ़ फरमा थे किसी ने हुज़ूर ﷺ से अर्ज़ किया या रसूल_अल्लाह ﷺ(आप की शान में तौहीन करने वाला) इब्न ए खतल काबा के पर्दों से लिपटा हुआ है आप ने फ़रमाया उसे क़त्ल करदो**

(बुख़ारी, किताब उल मग़ाज़ी)

जब हुज़ूर ﷺ ने उसके क़त्ल का हुक्म दिया तो उसे गिलाफ ए काबा से बाहर निकल कर बांधा गया और मस्जिद ए हराम में मक़ाम ए इब्राहीम और ज़मज़म के दरमियान उसकी गर्दन मार दी गयी

(फ़तहुल बारी , उम्दतुल क़ारी , इरशाद उस सारी)

खुलासा ये है के नबी ए करीम ﷺ को गाली देने वाले के कुफ्र और उसके मुस्तहिक़ ए क़त्ल होने में कोई शक व शुबह नहीं चारों अयम्मा (इमाम अबू हनीफा , इमाम मालिक ,इमाम शाफ़ई , इमाम अहमद बिन हन्बल) से यही मन्क़ूल है (फतावा शामी हनफ़ी)

मुहम्मद बिन सहनून ने फ़रमाया "**उलमा ए उम्मत का इज्मा है के नबी ए करीम ﷺ को गाली देने वाला और आपकी तौहीन करने वाला काफिर है और उसके लिए अल्लाह तआला की बईद जारी है और उम्मत के नज़दीक उस का हुक्म क़त्ल है जो उसके कुफ्र और अज़ाब में शक़ करे काफिर है**" (शिफा शरीफ #374)

गुस्ताख़ ए रसूल ﷺ से मेल जोल

बदक़िस्मती से हमारे मुआशरे में सुलहकुल्लियत का मर्ज़ बढ़ता जा रहा है मज़ाहिब ए बातिला (मसलन वहाबी ,देओबंदी, राफ्ज़ी) से मेल जोल को मुआशरती मजबूरी समझकर या कोई और वजह से ज़रूरी समझा जा रहा है अगर गुस्ताखों बेअदबों को साथ मिलाकर कुर्सी मजबूत करना और अपनी वाह वाह कराना मक़सूद हो तो इक़्तेदार का नशा तो पूरा हो जायेगा मगर दुनिया में ही ऐसा बुरा अंजाम होगा के इबरत का निशान बनना पढ़ेगा जबकि आख़िरत का अज़ाब बाक़ी है

गुस्ताखों से मेल जोल तो दूर की बात है उन बदबख्तों से नरमी करना भी गुनाह, हदीस शरीफ में है
"जब तुम किसी बदमज़हब को देखो तो उसके सामने तुर्शरोई (गुस्से से) पेश आओ इस लिए के अल्लाह तआला हर बदमज़हब को दुश्मन रखता है (कन्जुल उम्माल)

एक और हदीस में है
जिस शख्स ने बदमज़हब की इज़्ज़त की उस ने इस्लाम ढाने पर मदद की| (मजमूउल फतावा)

हज़रत मुल्ला अली क़ारी ने लिखा
"**यानी सहाबा किराम और उनके बाद वाले हर ज़माने के ईमान वालो की ये आदत रही है के वो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ के मुख़ालिफ़ों के साथ बायकॉट करते रहे हालांके उन ईमानदारों को दुनयावी तौर पर उन मुख़ालिफ़ों की ज़रुरत भी होती थी लेकिन वो मुसलमान खुदा तआला की रज़ा को उस पर तरजीह देते हुए बायकॉट करते थे**" (मिरक़ात)

साबित हुआ के बदमज़हबों से मेल जोल रखना हराम है और जो उनसे मेल जोल रखेगा तो वो अल्लाह उसके रसूल ﷺ और क़ुरआन ए मजीद की नाफरमानी करेगा नाफरमानी करने का अंजाम ये होगा के वो दुनिया में भी ज़लील होगा और आख़िरत का अज़ाब अभी बाक़ी है|

तमाम तारीफ़ें उस परवरदिगार ए आलम के लिए जिसने तमाम क़ायनात को अदब के दायरे में पैदा फ़रमाया फिर हर मख्लूक़ को अपने क़ानून ए फितरत के मुताबिक़ ख़ास निज़ाम ए अदब का पाबंद बनाया और दुरूदो सलाम हो उस के हबीब ए पाक, सरवर ए आलम, हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ पर जिन्होंने उम्मत को अदब का दर्स दिया जिसने इस दर्स पर अमल किया वो कामयाब हुआ और जिन्होंने गफलत इख़्तियार की वो नाकाम रहा | एक ज़माना वो था के अदब ए रसूल ﷺ का जज़्बा माँ, बाप आल औलाद और माल की मुहब्बत पर ग़ालिब था हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ के एक इशारे पर सदहा वुजूद हरकत में आने लगते थे हुज़ूर ﷺ अगर लुआब ए दहन(थूक मुबारक) गिराते तो वो किसी न किसी सहाबी के हाथ पर पड़ता था आप वुज़ू फ़रमाते तो उस पानी को लेने और मुँह पर मलने के लिए लोग हर तरफ से हाथ फैला देते आपका कोई तराशा हुआ नाख़ून या मूए मुबारक(बाल) गिरता तो लोग अदब से उठाकर एहतियात से महफूज़ रखते यही वो ताक़त थी जो जिस्म ए इस्लाम में जान का काम कर रही थी और दुनिया की बड़ी से बड़ी ताक़तों रुमा, ईरान को भी पामाल करती चली गयी | आज मुसलमानों में ये ताक़त ख़त्म हो चुकी है आज दुश्मनाने इस्लाम नामूस ए रिसालत ﷺ पर अपनी ज़बाने दराज़ करते हैं तो कोई इक्का दुक्का आशिक़ ए रसूल ही जान हथेली पर लेकर निकले तो निकले **वरना पूरी उम्मत में एक गफलत की नींद तारी है यही वजह है के आज मुसलमान निहायत कमज़ोर हैं ज़लील हैं और तमाम अक़वाम से गिरे हुए हैं इश्क़ ए रसूल ही मुसलमानो की रुह थी अब वही रूह नापैद हो चुकी है** लिहाज़ा हमने फ़र्ज़ समझा के इस गुमराही के आलम में हक़ की आवाज़ बलन्द करें और लोगो को हुज़ूर ﷺ की इज़्ज़त का मसला बताया जाये जो मसला सब मसलो से बढ़ा मसला है |

ताज़ीम ए रसूल ﷺ

अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ की अज़मत और ताज़ीम को लाज़िम फ़रमाया है *क़ुरान मजीद में इरशाद फ़रमाया*

"**ऐ नबी! बेशक हमने तुम्हें भेजा गवाह और खुशखबरी देता और डर सुनाता ताकि ऐ लोगो तुम अल्लाह और उसके रसूल ﷺ पर ईमान लाओ और रसूल ﷺ की ताज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो**" (सूरेह फतह #8-9)

मुसलमानो! देखो दीन ए इस्लाम भेजने का मक़सद ही अल्लाह तआला ने इन तीन बातों में बयान फ़रमाया है

1 . **लोग अल्लाह व रसूल पर ईमान लायें**
2 . **हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ की ताज़ीम करें**
3 . **अल्लाह तआला की इबादत करें**

बहुत से नसारा(ईसाई) नबी ए करीम ﷺ की शान में किताबें लिख चुके लेक्चर दे चुके मगर ईमान न लाये कुछ मुफीद (फायदेमंद) नहीं की ये ज़ाहिरी ताज़ीम हुई अगर सच्ची अज़मत होती तो ज़रूर ईमान लाते फिर जब तक नबी ए करीम ﷺ की सच्ची ताज़ीम न हो उम्र भर इबादत ए इलाही में गुज़ारे सब बेकार व मरदूद है

ऐसे लोगो के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है

"**जो कुछ आमाल उन्होंने किये हमने सब बरबाद कर दिए** " (सूरेह फुरकान #23)

तो पता चला के नबी ए करीम ﷺ की ताज़ीम मदार ए ईमान(ईमान की जान) मदार ए नजात और आमाल की क़ुबूलियत की असल है यानी ईमान सबसे अहम है मगर उनकी ताज़ीम न हो तो वो भी जाता रहेगा

सहाबा का इश्क़ ए रसूल ﷺ

उरवा बिन मसऊद ने ये वाक़िया बयान फ़रमाया के "सुलह हुदैबियह के मौक़ा पर मैं कुफ्फार ए मक्का का नुमाइंदा बनकर बारगाह ए नबवी ﷺ में हाज़िर हुआ तो मैं सहाबा किराम के वालिहाना जज़्बे से बहुत मुतास्सिर हुआ मैं ने देखा के ये जांनिसार हुज़ूर ﷺ की ऐसी इज़्ज़त करते हैं जिस की मिसाल नहीं मिलती **हुज़ूर ﷺ का वज़ू का पानी हासिल करने के लिए एक दुसरे पर सबक़त (यानी जल्दी) करते थे अगर हुज़ूर ﷺ अपना लुआब ए दहन नीचे गिराते तो उसको हासिल करके अपने चेहरों पर मल लेते अगर हुज़ूर ﷺ का कोई बाल हाथ आता तो उसको मेहफ़ूज़ रखते उनमे अगर किसी को काम बताया जाता तो फ़ौरन तामील करते जिस वक़्त हुज़ूर ﷺ कलाम फरमाते तो बिलकुल सन्नाटा छा जाता और सब कलामे नबी को बागौर सुनते हुज़ूर ﷺ की इज़्ज़त व तौक़ीर ऐसी करते जो दूसरो के लिए क़ाबिले ए तक़लीद है अदब का ये आलम था के वो अपनी गरदनें नीची रखते और हुज़ूर ﷺ की जानिब नज़रे नहीं उठाते थे**"

मुगीरा बिन शोबा ने फ़रमाया सहाबा किराम का मामूल ये था के वो कशाना ए नबुव्वत ﷺ पर हाज़िर होते तो फरते अदब से दरवाज़ा नाखूनों से खटखटाते थे (शिफा शरीफ #86 #87)

गुस्ताखी किसे कहते हैं ?

अवाम बल्कि बहुत बढ़े समझदार लोग समझते हैं के गुस्ताखी शायद गाली देने या किसी को कोई ऐब लगाने या उसकी तहक़ीर व तौहीन के अल्फ़ाज़ ही का नाम है ,नहीं नहीं बल्कि गुस्ताखी की एक क़िस्म और भी है वो ये के मलाएका और अंबिया किराम बिलख़ुसूस नबी ए करीम ﷺ के लिए ऐसे कलिमात बोलना या आपकी निस्बत ए अक़दस को किसी हक़ीर व क़बीह चीज़ से तश्बीह देना भी गुस्ताखी है और ये अवाम बल्कि बहुत से खुद को उलमा कहलवाने वाले कह गुज़रते हैं फिर उन्हें उस पर आगाह किया जाये तो तावीलें गढ़ने लगते हैं

अल्लाह तआला क़ुरआन ए मजीद में इरशाद फरमाता है

ऐ ईमान वालो! रायना न कहो और यूँ अर्ज़ करो के हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बगौर सुनो और काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है (सूरेह अल_बकरा #104)

हज़रात इब्न ए अब्बास इस आयत के तहत फरमाते हैं के ये लफ्ज़ (रायना) यहूद की ज़ुबान में गाली था अल्लाह तआला ने ईमान वालो से फ़रमाया तुम कहो "हम पर नज़र फरमाइए " इस आयत के नुज़ूल के बाद मोमिनीन कहते थे के जिस को तुम ये लफ्ज़ (रायना) इस्तेमाल करते हुए सुनो उस की गर्दन उड़ा दो तो यहूद उस के बाद इस लफ़्ज़ के इस्तेमाल से रुक गए.................|

(तफसीर दुर्रे मनसूर सफ़ा 278)

हुआ यूँ के जब हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ सहाबा किराम को कुछ नसीहत फरमाते तो सहाबा किराम दरमियान में कभी कभी अर्ज़ करते "रायना या रसूल_अल्लाह " यानि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ हमारी रियायत फरमाइए (यानी अपनी गुफ्तगू को दोबारा फरमा दीजिये) ताके हम लोग अच्छी तरह समझ लें और यहूदियों की ज़ुबान में लफ़्ज़ (रायना) बेअदबी के मायने रखता था यहूदियों ने उस लफ़्ज़ को गुस्ताखी की नियत से कहते थे अल्लाह तआला ने इस लफ़्ज़ के इस्तेमाल से ईमान वालो को मना फ़रमाया और फ़रमाया के अब रायना की जगह उन्ज़ुरना (यानी हम पर नज़र फरमाइए) कहो|

साबित हुआ के जिस लफ़्ज़ में बे अदबी का गुमान हो वो हरगिज़ ज़ुबान पर लाना मना है और नबी ए करीम की शान में गुस्ताखी करने वाला काफिर है|